पवित्रता, हर समय रक्षक

दुनिया में अगर कोई शक्ति है, जो हर समय आपको सुरक्षित महसूस करा सकती है, तो वह है पवित्रता की शक्ति। पवित्रता वह कवच है, जो आपको हर वक्त सम्भालती है, संवारती है, कभी भी कहीं भी। आप उन किवदन्तियों को भी उठा सकते हैं, जहाँ मानवता की रक्षा भी पवित्रता द्वारा हुई है। आपको आज हम इसकी थोड़ी गहराई में ले चलते हैं...

आपने कभी देवी-देवताओं के पीछे एक लाइट देखी होगी। वह लाइट कोई साधारण लाइट नहीं, परंतु पवित्रता की एक अद्भुत निशानी के रूप में होती है। वह लाइट हमारे मन की लाइट स्थिति को सामने प्रत्यक्ष करती है। हम जितने मन से हल्के होते हैं, वह लाइट हमारे पीछे एक आभामण्डल के रूप में प्रखर होती है। पवित्रता बाहरी विघ्नों से बचने का अचूक हथियार है। यह एक छत्रछाया है। पवित्रता सुख-शांति का प्रमुख आधार है। आपको यह सोचकर हैरानी होगी कि किसी भी तरह का दु:ख व अशांति अपवित्रता का ही परिणाम है, ना कि किसी और चीज़ के कारण हम दु:खी या अशांत हैं।

आपको हम एक उदाहरण से समझाने की कोशिश करते हैं... जैसे संसार उस चीज़ को ज़्यादा पसंद करता है, जिसमें मिलावट न हो। आप जब पैदा हुए, तो कितने पवित्र थे, उस समय आपके अंदर कोई मिलावट नहीं थी। कोई भेदभाव नहीं था। हम भी किसी से मिलते थे और कोई हमसे भी मिलने में बहुत अच्छा महसूस करता था। कारण, हमें याद नहीं कि सामने वाला अलग है, मैं अलग हूँ, हम बस जीते हैं, बिना किसी शर्त के। इसीलिए हर बच्चा सबको कितना आकर्षित करता है! उसे उसी पवित्रता के कारण रीयल प्रोटेक्शन फील होता है। हर कोई दिल से सोचता है अपने बच्चों के बारे में। लेकिन थोड़ा बड़े होते जाते हैं तो हम किसी-किसी बात में उलझते ही चले जाते हैं। हमारी मन की स्थिति इतनी बदल जाती है कि हमारे वायब्रेशन्स बदलते ही चले जाते हैं और सबकुछ बदला नज़र आता है। हम दैहिक आकर्षण में आते जाते हैं और अपनी अपवित्रता को बढ़ाते जाते हैं। इसका अर्थ तो यही हुआ ना कि जब हम खुद को भी याद नहीं रखते तथा दूसरों के साथ भी वैसा व्यवहार नहीं कर पाते, तब तक आभामंडल शक्तिशाली है। अर्थात् कोई बड़ा है, कोई छोटा है, कोई मेल है, कोई फीमेल है। कोई भी विनाशी चीज़ों से सम्बन्धित विचार हमें अपवित्र बनाते ही जाते हैं। कितना बड़ा रहस्य है इस बात के पीछे, अगर हल्का सा भी दु:ख आपको होता है, तो इसका कारण पवित्रता की कमी है। वो या तो विचारों का होगा, वस्तुओं का होगा, व्यक्तियों का होगा, चूंकि ये बदल जाते हैं, इनमें परिवर्तन होता है। अर्थात् हमारा व्यवहार उसी आधार से वहाँ हो रहा था।

आज कोई किसी को ई.मेल भेजता, वाट्सएप्प भेजता या कोई बात लिखता, उसमें व्यक्तिगत रूप से यदि अपवित्रता होगी तो वह हमें कभी सुख नहीं देगी, लेकिन किसी की बात पढ़कर हमें सुख मिलता है, शांति मिलती है, तो इसका मतलब उसके अंदर पवित्रता भरपूर है। किसी की बात पढ़कर हमें अशांति की फीलिंग आ जाती है, तो इसका कारण है उसके शब्दों में पवित्रता की कमी है और उसके वायब्रेशन्स ठीक नहीं हैं।

- ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

परमात्मा हमें उस लेवल की पवित्रता देना चाहते हैं कि आप जहाँ खड़े हो जाओ, आपसे हर कोई इतना अच्छा महसूस करे कि उसे आपसे परमात्मा की फीलिंग आए। इसलिए शायद सभी देवताओं के पास जाकर पवित्रता को महसूस करते हैं। यह लाज़मी है कि सबकुछ हमें यहीं महसूस हो जाता है। वह जड़ मूर्तियाँ हमें अच्छा महसूस कराती हैं। हमें तो सोचने समझने की शक्ति है ना।

जो जितना पवित्र, उसकी इत्र की खुशबू चारो तरफ फैलती ही है। उससे हर कोई प्राप्ति कर लेता है। तो हम और आप भी, सबकी नज़रों में उठना चाहते हैं, तो बस जाति, धर्म, भेदभाव से ऊपर उठकर, स्वयं को आत्मा समझकर तथा दूसरे को भी आत्मा समझ व्यवहार करें। सबकुछ बदल जायेगा।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दे

जकातवाडी-सातारा(महा.)। सेवाकेन्द्र में आने पर ग्राम पंचायत के नवनिर्वाचित सरपंच चंद्रकांत यशवंत सणस को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शांता।

मन की बात
- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न: मैं कुछ समय से ही ज्ञान में हूँ, मेरे जीवन में कठिन समय चल रहा है। बिज़नेस में बहुत घाटा होने लगा है। इन समस्याओं से मुक्त होने के लिए क्या अभ्यास करें?

उत्तर: आप अपने चित्त को शांत करें और ये संकल्प करें कि ये कठिन समय जल्दी ही समाप्त हो जाएगा और हमारे अच्छे दिन जल्दी ही आ जाएंगे।

रोज सवेरे आँख खुलते ही आप ये अभ्यास करें - मैं बहुत भाग्यवान हूँ, मैं बहुत सुखी हूँ, हमारे अच्छे दिन चल रहे हैं. ..... ये तीन संकल्प पाँच बार करें। आपके जीवन में ये जो विघ्न आये हैं उन्हें दूर करने के लिए इक्कीस दिन की विघ्न-विनाशक योग भट्ठी करें।

एक घंटा प्रतिदिन पॉवरफुल योग करें। योग से पहले सात बार दो स्वमान याद करें - मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, विघ्न-विनाशक हूँ।

प्रश्न: आजकल तंत्र-मंत्र का प्रभाव बहुत बढ़ रहा है, इस तंत्र-मंत्र के प्रभाव से बचने के लिए हम क्या करें?

उत्तर: तंत्र-मंत्र भी संकल्प शक्ति ही है। हमारे पास सबसे शक्तिशाली संकल्प है - मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ.....परमात्म शक्तियाँ मेरे पास हैं..... स्वयं सर्वशक्तिवान मेरे सिर पर छत्रछाया है। इसलिए दृढ़तापूर्वक संकल्प कर लो कि मुझ पर इन सबका कोई असर हो ही नहीं सकता।

याद रखें - जो आत्माएँ मास्टर सर्वशक्तिवान के नशे में रहती हैं वो निर्भीक हैं , तंत्र-मंत्र, ब्लैक मैजिक उन पर कोई भी प्रभाव डाल नहीं सकता।

प्रतिदिन सवेरे सात बार संकल्प करें- मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। इससे आपके चारो ओर शक्तिशाली प्रभामंडल निर्मित हो जाएगा।

प्रश्न: बाबा कहते हैं कि मन के द्वारा सबको वायब्रेशन्स दो, वाचा के द्वारा ज्ञान दान करो और कर्मणा के द्वारा गुणों का दान करो। यह तीनों कार्य साथ-साथ करने की विधि क्या है?

उत्तर: सारे दिन में यदि हमारे मन में श्रेष्ठ विचार होंगे तो सारे दिन हमारे चारो ओर श्रेष्ठ वायब्रेशन्स फैलते रहेंगे। जितना सारा दिन हम योगयुक्त रहेंगे तो हमसे चारो ओर लाइट और माइट फैलती रहेगी, क्योंकि योगी आत्माएं चलते-फिरते लाइट हाउस हैं।

इसी कर्मक्षेत्र पर रहते हुए हम स्वमान का अभ्यास करेंगे तो उसी तरह के वायब्रेशन्स चारो ओर फैलते जाएंगे। जब भी कोई व्यक्ति हमें मिले तो हम उसे ज्ञान दें, उसे सच्ची राह दिखायें। इस भावना के साथ कि इसका भी प्रभु मिलन हो जाए।

कर्म करते हुए यदि हम सरल चित्त होंगे, यदि हमारे चेहरे पर मुस्कान होगी, कर्म करते भी हम यदि शांत स्वभाव को कायम रखेंगे, कर्म में ऊपर-नीचे होने पर हम तनावग्रस्त नहीं होंगे, यदि कर्मक्षेत्र पर हम बहुत सहनशील बनकर रहेंगे, हमारी वाणी में मधुरता होगी, हम क्रोध और अहंकार से मुक्त होंगे तो लोग हमसे गुण सीखते रहेंगे। इन तीनों सेवाओं से अत्यधिक पुण्य का बल मिलता है।

प्रश्न: ज्वालास्वरूप योगाभ्यास करने के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

उत्तर: ज्वालास्वरूप योग का अनुभव वही कर सकता है जो सारा दिन अंतर्मुखी रहे और व्यर्थ संकल्पों से मुक्त रहे।

व्यर्थ संकल्पों से मुक्त होना अति महत्वपूर्ण है। इसके लिए निम्नलिखित बातों को जीवन का सिद्धांत बनायें.....व्यर्थ बातों को सुनने में जरा भी रूचि न हो। ज़्यादा बोलने की आदत को छोड़ दें। दैहिक दृष्टि का त्याग कर आत्मिक दृष्टि का अभ्यास बढ़ायें।

कर्मेन्द्रियों के रस से स्वयं को मुक्त करें। अवगुणी दृष्टि व परचिंतन का परहेज़ करें। श्रेष्ठ स्थिति को प्राप्त करना है तो अभ्यास करना अत्यंत आवश्यक है।

प्रश्न: मुझे नींद को जीतना है, इस कारण मुरली क्लास का सम्पूर्ण फायदा प्राप्त नहीं हो पाता है। कृपया निद्राजीत बनने की विधि बताएं?

उत्तर: नींद को कण्ट्रोल करने के लिए भोजन सात्विक होना आवश्यक है। भोजन उतना ही करना चाहिए जितना आवश्यक हो।

रात्रि सोने से पूर्व आधा घंटा योग करें। योग बल से ही निद्राजीत बन सकते हैं। अशरीरीपन का अभ्यास निद्राजीत बनने में बहुत मदद करेगा। साथ-साथ शरीर को तंदुरुस्त रखने के लिए आसन-प्राणायाम भी करना चाहिए। मन के ढ़ीले संकल्प भी मनुष्य को सुलाते हैं, इसलिए मन को मज़बूत बनाओ।

प्रश्न: मैं एक माता हूँ, कलियुग के प्रभाव के कारण मेरे बेटे बिगड़ गए हैं उन्हें इस प्रभाव से कैसे बचाएं?

उत्तर: सर्वप्रथम आप बच्चों को योगयुक्त पवित्रता की शक्ति से भरपूर भोजन खिलायें। भोजन बनाते समय यह अभ्यास बार-बार करें... मैं परम पवित्र आत्मा हूँ और शिवबाबा मेरे साथ हैं।

दूसरा, सवेरे व शाम को राजयोग का अभ्यास करें। योग से पूर्व दो स्वमानों का अभ्यास करें - मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, विघ्न विनाशक हूँ। अपने बच्चों को आत्मा रूप में देखते हुए ये संकल्प करें कि ये बच्चे बहुत अच्छी आत्माएं हैं और उन्हें पवित्रता के वायब्रेशन्स दें।

Contact e-mail
bksurya8@yahoo.com